दिग्विजयनाथ स्नातकोत्तर महाविद्यालय
गोरखपुर-273001
(नैक प्रत्यायित 'B++' श्रेणी)
सम्बद्ध
दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर

☎ : 0551-2334549
: 09792987700
e-mail : dnpggkp@gmail.com
website : www.dnpgcollege.edu.in

पत्रांक : /2020–21 दिनांक 23.06.2021

प्रकाशनार्थ

आज दिनाँक 23 जून 2021 को दिग्विजयनाथ पी जी कॉलेज गोरखपुर एवं साइंस टेक इंस्टीटूट लखनऊ के संयुक्त तत्वाधान में ज़ूम एप के माध्यम से आयोजित सप्तदिवासिय फैकल्टी डेवलपमेंट प्रोग्राम में मुख्य वक्ता प्रोफेसर मसूद सिद्दीकी ने विषय "अनुसंधान डेटा संग्रह और डेटा विश्लेषण" पर बोलते हुए कहा कि अनुसंधान के क्षेत्र जो सबसे विविध वैज्ञानिक विषयों को रेखांकित करते हैं जो सभी निर्धारण स्थितियों और पैटर्न को प्रभावित करते हैं और बिल्कुल सभी प्रक्रियाओं को नियंत्रित करते हैं मौलिक अनुसंधान।ज्ञान के किसी भी क्षेत्र में सैद्धांतिक और प्रायोगिक अनुसंधान की आवश्यकता होती है, संरचना रूप, संरचना गुणों के साथ-साथ उनसे जुड़ी प्रक्रियाओं के लिए जिम्मेदार पैटर्न ढूंढना एक मौलिक विज्ञान है। यह सबसे प्राकृतिक विज्ञान और मानविकी के बुनियादी सिद्धांतों की चिंता करता है। मौलिक अनुसंधान अध्ययन के विषय के बारे में वैचारिक और सैद्धांतिक विचारों का विस्तार करने के लिए कार्य करता है।

प्रोफ. सिद्दीकी ने आगे बोलते हुए कहा कि वैज्ञानिक अनुसंधान वास्तविकता का अध्ययन और समझने की प्रक्रिया,व्यक्तिगत पर्यावरणीय घटनाओं और उनके पैटर्न के बीच कनेक्शन अनुभूति लोगों की चेतना की जटिल प्रक्रिया है यह वास्तव में अधिक सटीक और पूर्ण ज्ञान की दिशा में एक आंदोलन का प्रतिनिधित्व करता है। इस तरह से वैज्ञानिक शोध से गुजरना संभव है। लागू विज्ञान या प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में, वैज्ञानिक अनुसंधान के चरण, जो कि कुछ समस्याओं के अध्ययन के दौरान निरंतर उत्तीर्ण होना चाहिए। सात लगातार चरण अलग-अलग होते हैं, जिनमें से प्रत्येक वैज्ञानिक अनुसंधान के चरणों का वर्णन करते हैं। प्रथम चरण में आवश्यक है समस्या का निर्धारण, द्वितीय चरण आगे बढ़ना और मूल परिकल्पना को सही ठहराना,तृतीय चरण है सैद्धान्तिक अनुसंधान ,चतुर्थ चरण प्रायोगिक अनुसंधान,पांचवे चरण में हम परिणामों का विश्लेषण करते हैं,छठे चरण में निष्कर्ष तैयार करते हैं और अंतिम सातवें चरण में शोध परिणामों के औद्योगिक कार्यान्वयन की तैयारी करते हैं।इन सात चरणों को वैज्ञानिक अनुसंधान के मुख्य चरणों में कम कर दिया गया है, जो कामकाजी परिकल्पना से जीवन में अनुसंधान के परिणामों के कार्यान्वयन के लिए पारित किया जाना चाहिए।

कार्यक्रम के संरक्षक डॉ शैलेन्द्र प्रताप सिंह ,अध्यक्षता प्रोफेसर आर.के शुक्ला एवं श्रीमती स्वेता सिंह एवं संचालन डॉ एस. के सिंह एवं डॉ धर्मेन्द्र यादव ने किया। कार्यक्रम के संयोजक डॉ परीक्षित सिंह ने सभी अतिथियों सहित प्रतिभागियों के प्रति आभार ज्ञापन किया। इस ऑनलाइन कार्यक्रम में महाविद्यालय के शिक्षक,अन्य महाविद्यालयों के शिक्षक सहित 224 प्रतिभागियों ने ऑनलाइन प्रतिभाग किया।

डॉ शैलेश कुमार सिंह
प्रभारी, सूचना एवं जनसंपर्क